जहां तक चने का संबंध है, भारतीय खाद्य निगम राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में उसकी अधिप्राप्ति/खरीदारी उचित मूल्य पर करेगा ।

गन्ने का मूल्य

1542. श्री मोहन स्वरूप :
श्री मृत्युंजय प्रसाद :
श्री विश्वनाथ पाण्डेय :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या 1967-68 के आगामी गन्ना पेरने के मौसम में गन्ने का प्रति क्विंटल मूल्य निर्धारित करने का प्रश्न विचाराधीन है; और

(ख) यदि हां, तो गन्ने का मूल्य कब तक निर्धारित किये जाने की संभावना है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अन्नासाहिब शिन्दे) : (क) और (ख) सरकार ने 2 मार्च, 1967 को यह घोषित किया था कि 1967-68 के मौसम के लिये गन्ने का मूल्य 9.4 प्रतिशत या इससे कम उपलब्धि पर रु० 5.68 प्रति क्विंटल होगा । ज्यादा उपलब्धि होने पर अधिक मूल्य देने की भी व्यवस्था है । इस मूल्य में वृद्धि के बारे में अभ्यावेदन प्राप्त हुये हैं । मामला विचाराधीन है । इन अभ्यावेदनों पर जल्द ही निर्णय किया जाएगा ।

कृषि अनुसन्धान केन्द्र

1543. श्री मोहन स्वरूप : क्या खाद्य तथा कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में इस समय कितने कृषि अनुसन्धान केन्द्र चल रहे हैं;

(ख) कृषि मन्त्रालय द्वारा इस बात को सुनिश्चित करने के लिये क्या कार्यवाही की जा रही है कि इन केन्द्रों में अनुसन्धान के द्वारा निकाले गये कृषि के तरीकों से किसानों को जल्दी से जल्दी अवगत कराया जाय; और

(ग) खेती को उन्नत बनाने की दिशा में अनुसन्धान कार्यों से क्या लाभ पहुंचा है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अन्नासाहिब शिन्दे) : (क) देश में लगभग 540 कृषि अनुसन्धान केन्द्र हैं ।

(ख) अनुसन्धान प्रयोगशालाओं तथा परीक्षण केन्द्रों में विकसित की गई नई तकनीकों को खेतों में अपनाने हेतु विस्तार कार्यकर्त्ताओं तथा किसानों को नए तरीकों तथा तकनीकियों से अवगत कराने के लिए कदम उठाए गए हैं । वैज्ञानिक उन राष्ट्रीय प्रदर्शनों में सहयोग दे रहे हैं जो समस्त देश में किए जा रहे हैं और जिन के द्वारा अनुसन्धान से निकाले गए परिणामों को किसानों के खेतों में अपनाया जा रहा है । इसके अतिरिक्त केन्द्रीय अनुसन्धान संस्था तथा कृषि विश्वविद्यालय नियमित रूप से "किसानों के दिन" संगठित करते हैं और किसानों के लिए प्रशिक्षण सम्बन्धी छोटे कोर्स चलाते हैं । यह कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है ।

(ग) विशेषतया हाल के वर्षों में देश में कृषि उत्पादन को उन्नत करने में भारतीय वैज्ञानिकों ने असाधारण अंशदान दिया है । मक्की, ज्वार और बाजरा की अधिक उपज वाली किस्मों का विकास और गेहूं तथा चावल की लघु, नान-लौजिंग किस्म देश में महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है । इन नई किस्मों तथा संकरज द्वारा ही जो हमारे किसानों तथा खेती को अधिक उन्नत बनाने में महत्व रखते हैं आत्मनिर्भर होने के लिए अधिक उपज वाली किस्म कार्यक्रम को चलाना अब सम्भव हो सका है ।